



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 268]

नई दिल्ली, मंगलवार, नवम्बर 21, 2000/कार्तिक 30, 1922

No. 268]

NEW DELHI, TUESDAY, NOVEMBER 21, 2000/KARTIKA 30, 1922

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 नवम्बर, 2000

प्रारंभिक निष्कर्ष

विषय : यूरोपीय संघ से एनीलिन के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच—प्रारंभिक निष्कर्ष।

सं. 21/1/2000-डी जी ए डी—सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (1995 में यथा संशोधित) तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. कार्य पद्धति

1. जांच के लिए निम्नलिखित कार्य-पद्धति अपनाई गई है:-

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसमें इसके बाद प्राधिकारी कहा जाएगा) को उपरोक्त नियमावली के अधीन घरेलू उद्योग की ओर से मैसर्स हिन्दुस्तान ओरगेनिक केमिकल लिलो (एच ओ सी एल), मैलो नर्मदा केमाटूर पेट्रो केमिकल्स लिलो (एन सी पी एल) तथा मैलो एनीरोक्स पिगमेंट्स लिलो से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ है जिसमें यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए एनीलिन के पाटन का आरोप लगाया गया है।

- (ii) याचिकाकर्ता द्वारा दायर की गई याचिका का आरंभिक जांच से कतिपय त्रुटियों का पता लगा जिन्हें याचिकाकर्ता द्वारा बाद में ठीक कर दिया गया था । इसके बाद याचिका को सही दस्तावेज माना गया है ।
- (iii) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किये गये पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर प्राधिकारी ने यूरोपीय संघ मूल के अथवा वहां से नियातित एनीलिन के पाटित आयातों की जांच आरंभ करने का निर्णय किया ।

प्राधिकारी ने नियम के उपनियम 5(5) के अनुसार जांच शुरू करने से पहले पाटन के आरोप के प्राप्त होने की सूचना यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल, नई दिल्ली को दी ।

- (iv) प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के सीमाशुल्क उपशीर्ष सं. 2921.41 के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत उक्त देशों के मूल के या वहां से निर्यातित एनीलिन के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच आरंभ करते हुए तारीख 29 मई, 2000 की एक सार्वजनिक सूचना भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित की ।
- (v) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों (जिनके बौरे याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए थे) तथा उद्योग परिसंघों को भी भेजा, और उन्हें इस पत्र के जारी होने की तिथि से चालीस दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया ।
- (vi) प्राधिकारी ने एनीलिन के ज्ञात आयातकों (जिनका विवरण याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराया गया था) को सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उनसे पत्र की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार लिखित रूप से देने के लिए कहा ।
- (vii) केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सी बी ई सी) से एनीलिन के आयातों का विवरण देने का अनुरोध किया गया था ।
- (viii) प्राधिकारी ने पूर्वोक्त नियम 6(3) के अनुसार याचिका की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों और यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल को भेजी ।
- (ix) प्राधिकारी ने संबद्ध सूचना प्राप्त करने के लिए नियम 6(4) के अनुसार निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी:-

1. मै0 बी ए एस एफ एकटिनजेसेलचेफट, लुडविगशैफेन, जर्मनी
2. मै0 बेयर्स ए जी, 5090 लेवरक्यूसेन, जर्मनी

निम्नलिखित निर्यातकों से उत्तर प्राप्त हुए थे:-

1. मै0 बी ए एस एफ एकिंटगसेल्स शाफ्ट, लुडविगशाफेन
2. मै0 बेयर ए जी लीवर कुसेन, जर्मनी

(x) यूरोपियन संघ के प्रतिनिधिमंडल को नियम 6(2) के अनुसार जांच शुरू करने के बारे में इस अनुरोध के साथ सूचना दी गई थी कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें। निर्यातकों को भेजे गए पत्र, याचिका और प्रश्नावली की एक प्रति ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ उनके पास भी भेजी गई थी।

(xi) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में एनीलिन के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों को एक प्रश्नावली भेजी गई थी:

आयातकों की सूची

1. मै0 गुजरात डाइ स्टफ इंडस्ट्रीज, बड़ौदा
2. मै0 मारडिया कैमिकल्स लि�0, अहमदाबाद
3. मै0 नवीन कैमिकल इंटरप्राइजेज, देवास
4. मै0 जे के फार्मा, अहमदाबाद
5. मै0 आई सी आई इंडिया लि�0, वृक्षकर्ता
6. मै0 डिन्टेक्स डाइकैम लि�0, अहमदाबाद
7. मै0 अनार कैमिकल इंडस्ट्रीज, अहमदाबाद
8. मै0 मैट्रोकेम इंडस्ट्रीज लि�0, अहमदाबाद
9. मै0 नोसिल, थाणे
10. मै0 साइनाइड्स एण्ड कैमिकल्स कंपनी, सूरत
11. मै0 गणेश कैमिकल इंडस्ट्रीज, मुंबई
12. मै0 कलर कैम लि�0, थाणे
13. मै0 इंडोकोल-कैम लि�0, अहमदाबाद
14. मै0 बेयर इंडिया लि�0, थाणे
15. मै0 इंड सोलवेंट्स एण्ड कैम. प्रा. लि., अंकलेश्वर
16. मै0 जयसिंथ डाइकैम, लि�0, मुंबई
17. मै0 सहयाद्रि डाइस्टफ एण्ड कैमिकल्स, पुणे
18. मै0 गायत्री इंटरमीडिएट्स (प्रा0) लि�0, अहमदाबाद

निम्नलिखित आयाताकों से उत्तर प्राप्त हुए थे:-

1. मै0 बेयर्स (इंडिया) लि�0, मुंबई
2. मै0 आई सी आई इंडिया लि�0, गुडगाँव, हरियाणा

3. मै0 कलर कैमरालॉ, (क्लोरिएंट), थाणे
4. मै0 नेशनल आर्गेनिक कैमिकल्स इंडस्ट्रीज लि., मुम्बई

- (xii) कुछ हितबद्ध पार्टियों ने उत्तर देने के लिए समय बढ़ाने का अनुरोध किया था जो प्राधिकारी द्वारा उपयुक्त कारणों के आधार पर दे दिया गया था ।
- (xiii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश को सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा और उसे हितबद्ध पार्टियों द्वारा देखने के लिए खुला रखा।
- (xiv) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) तथा याचिकाकर्ता द्वारा दी गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की ईष्टतम उत्पादन लागत तथा माल को बनाने और बेचने की लागत का हिसाब लगाने के लिए लागत जांच भी की गई ।
- (xv) *** यह चिह्न इस अधिसूचना में किसी हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर की गई सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय ही माने जाने का द्योतक है ।
- (xvi) जांच 1 अप्रैल, 1999 से 31 दिसम्बर, 1999 तक की अवधि के लिए की गई थी ।

ख. याचिकाकर्ताओं के विचार

2. याचिकाकर्ताओं ने अपनी याचिका में निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं -

- (1) यूरोपीय संघ के निर्यातकों, विनिर्माताओं और व्यापारियों द्वारा एनीलिन का पाटन किया जा रहा है ।
- (2) एनीलिन का आयात सीधे ई यू से और स्विटजरलैंड जैसे तीसरे देशों के व्यापारियों के जरिए किया जा रहा है ।
- (3) डी जी सी आई एण्ड एस, कलकत्ता के जरिए भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सरकारी आंकड़ों से एनीलिन के आयातों की मात्रा एवं मूल्य के संबंध में सही, विश्वसनीय और तथ्यपरक स्थिति का पता चलता है । ई यू से हुए आयातों ~~मैं अमरा रूप से~~ वृद्धि हुई है । ई यू से हुए आयात जो 1996-97 में केवल 236.53 मी.टन थे, अप्रैल-दिसम्बर 1999 की अवधि के दौरान बढ़कर 1140.5 मी.टन अर्थात् 1521 मी.टन वार्षिक आधार (पर) हो गए ।
- (4) जापान/यू एस ए के निर्यातकों द्वारा पाटन का सहारा लिए जाने के कारण ई यू से हुए आयातों के बाजार हिस्सों में पहले गिरावट आई थी, तथापि जापान/यू एस ए के खिलाफ पाटनरोधी कार्रवाई शुरू किए जाने से ई यू से होने वाले निर्यातों में तेजी से वृद्धि हुई । अप्रैल-दिसम्बर, 1999 की अवधि में ई यू से हुए आयात 98 प्रतिशत रहे (पिछले वर्ष में ये लगभग 3 प्रतिशत थे) ।
- (5) यूरोपीय संघ से हुए आयातों के कारण कीमतों में भारी कमी आ रही है । यूरोपीय संघ से हुए आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है ।

ग. निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

निर्यातक

3.1 मै0 बी ए एस एफ जर्मनी:

उन्होंने बताया है कि उनके द्वारा जांच अवधि के दौरान भारत को एनीलिन का निर्यात नहीं किया गया है। उन्होंने बताया है कि बी ए एस एफ विचाराधीन उत्पादन अर्थात् एनीलिन का उत्पादन कर रखा है। और अवधि के दौरान इस यू के किसी भी देश से भारत को बी ए एस एफ की खेप नहीं भेजी गई है। तथापि, जब वे भारत को निर्यात आरंभ करते हैं तो नियम 22 के अंतर्गत नए शिपर संबंधी जांच को दायर करने के अपने अधिकार को सुरक्षित रखते हैं।

3.2 मै0 बेयर ए जी जर्मनी:

उन्होंने बताया है कि 1 अप्रैल से 31 दिसम्बर, 1999 की जांच अवधि में बेयर ए जी ने भारत को एनीलिन उत्पाद का निर्यात नहीं किया है।

आयातक

3.3 मै0 बेयर (इंडिया) लि�0, (बी आई एल) मुंबई:

उन्होंने बताया है कि उन्होंने अप्रैल 1997 से दिसम्बर 1999 तक की अवधि के दौरान सीधे आयात नहीं किया है। तथापि बी आई एल ने अप्रैल-मई, 1999 के दौरान मै0 सी जे शाह के जरिए 128.34 मी. टन की खरीद की थी।

बी आई एल ने एनीलिन की अपनी खरीददारियों के प्रति स्थानीय विनिर्माताओं को पूरा समर्थन दिया है।

उन्होंने यह भी बताया है कि जापान और यू एस ए के मूल के एनीलिन के आयातों पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद स्थानीय विनिर्माताओं ने एनीलिन की अपनी कीमतें बढ़ा दी हैं और उन्होंने पाटनरोधी जांच की शुरूआत करने के लिए याचिकाकर्ताओं के इस कदम का कड़ा विरोध किया है।

3.4 मै0 आई सी आई इंडिया लि�0 हरियाणा:

मै0 आई सी आई इंडिया लि�0, यू के की मै0 आई सी आई पी एल सी की एक सहायक कंपनी है। उन्होंने यह कहा है कि वे रंगों, रबड़, रसायन, भेषज तथा विशेषतः रसायन इत्यादि के विनिर्माण के विनिर्माण और व्यापार में संलग्न हैं।

उन्होंने यह भी कहा है कि जांच अवधि के दौरान एनीलिन का कोई आयात नहीं किया गया था।

3.5 मै0 कलर कैमि.लि0, थाणे (क्लैरिएंट)

आयातकों ने बताया है कि उन्होंने एनीलिन के तेल का आयात नहीं किया है और उन्होंने घरेलू आपूर्ति के स्रोतों से केवल कच्ची सामग्री ही खरीदी है। उन्होंने यह भी कहा है कि एनीलिन तेल की घरेलू कीमतों में वृद्धि होने से विभिन्न सहवर्ती उत्पादों की लागत प्रभावित हुई है जिससे आयात और अधिक आकर्षक हो गए हैं।

3.6 मै0 नेशनल आर्गेनिक कं0 लि0, मुंबई:

आयातकों ने यह अनुरोध किया है कि यद्यपि याचिकाकर्ता ने अपनी याचिका में यह तर्क दिया है कि यूरोपीय संघ से भारत को निर्यात सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 के में यथा परिभाषित सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया जाता है, तथापि याचिका में यह प्रकट तथा निर्दिष्ट नहीं किया गया है कि उनके अनुसार सामान्य मूल्य क्या है।

सामान्य मूल्य के प्रयोजन के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा जिस पत्रिका/बुलेटिन की सूचना पर भरोसा किया है, उसे गोपनीय सूचना के रूप में नहीं माना जा सकता।

जांच अवधि के लिए याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत की गई आयात संबंधी सूचना विश्वसनीय नहीं है। जैसा कि स्वयं याचिकाकर्ताओं द्वारा स्वीकार किया गया है कि अगस्त-दिसम्बर, 1999 के दौरान एनीलिन का कोई आयात नहीं हुआ है। घरेलू उद्योग द्वारा अप्रैल-दिसम्बर, 99 के दौरान एनीलिन के उत्पादन से याचिकाकर्ताओं को कोई क्षति प्रदर्शित नहीं होती है। बिक्री जैसे अन्य संकेतकों से घरेलू उद्योग को कोई क्षति प्रदर्शित नहीं होती है। घरेलू उद्योग अप्रैल 1999-दिसम्बर, 1999 और उससे आगे वास्तव में क्रमिक रूप से कीमतों में वृद्धि करने में समर्थ रहा है। याचिकाकर्ताओं द्वारा तैयार की गई कीमतों में कटौती की अवधारणा गलत तथा झूठी है।

चूंकि पाटन का आरोप जर्मनी के केवल दो विनिर्माताओं बारे में है इसलिए याचिकाकर्ता केवल जर्मनी के मूल के एनीलिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग कर सकते हैं और न कि ई यू में किसी भी स्थान के मूल के एनीलिन पर जिसे सामान्यतः अन्य के रूप में अधिसूचित किया गया है। अधिसूचना में भी बी ए एस एफ बेयर, जर्मनी के मूल की वस्तु को एनीलिन के रूप में विर्णिदिष्ट किया जाना चाहिए न कि जर्मनी/ई यू से निर्यातित एनीलिन को, क्योंकि पूर्वी यूरोप के उत्पादक अपने निर्यातों के लिए रोटरद्रम जैसे पश्चिमी तटों का प्रयोग भी करते हैं।

उन्होंने अनुरोध किया है कि इस याचिका में कोई गुण नहीं है और निवेदन किया है कि उसे रद्द कर दिया जाए।

(घ) उठाए गए मुद्दों की जांच

4.1 याचिकाकर्ताओं, निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए पूर्वोक्त अनुरोधों की उस सीमा तक, जिस सीमा तक ये नियमों के अनुसार संगत हैं और जिस सीमा तक ये इस मामले पर प्रभाव डालते हैं, की जांच की गई है और उन पर विचार किया गया है तथा इन निष्कर्षों में उन पर उचित स्थानों पर कार्रवाई की गई है।

(ड) विचाराधीन उत्पाद

5.1 मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद एनीलिन तेल के नाम से भी जाना जाता है। एनीलिन पारदर्शी, तेलीय है। जब नए सिरे से डिस्टिल करने पर यह रंगहीन से पीले रंग में बदल जाता है। प्रकाश अथवा वायु के संपर्क में आने पर यह काला हो जाता है। एनीलिन एक प्राथमिक अमीन का यौगिक है और यह औषधियों, भेषजों, रंजकों तथा रंजक मध्यवर्ती उत्पाद जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों के लिए आवश्यक एक मूलभूत कार्बनिक रसायन है। एनीलिन का प्रयोग रबड़ रसायन, विस्फोटक, रेजिन आदि जैसे कुछ अन्य उद्योगों में भी किया जाता है।

5.2 एनीलिन रबड़ रसायनों वल्कनीकरण, एक्सीलरेटर एंटी ओक्सीडेंट्स, रंजकों, औषधियों जैसे एनलजिन सल्फा ड्रग्स, फोटोग्राफिक रसायनों (हाइड्रोक्वीनोन), आइसो साइनेट्स (एम डी आई या मैथीलिन डिफेनीलिन डाई-आई सोसाइनेट) के लिए एक मध्यवर्ती उत्पाद है। भारत में एनीलिन के उत्पादन के 70 प्रतिशत भाग का उपयोग रबड़ रसायनों, औषधियों और औषधि मध्यवर्ती उत्पादों तथा रंजक उद्योगों में किया जाता है जबकि विश्व भर में होने वाले एनीलिन के उत्पादन का 80 प्रतिशत भाग का उपयोग एम डी आई में किया जाता है।

5.3 एनीलिन सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 के तहत सीमाशुल्क उप शीष सं. 2921.41 के अंतर्गत वर्गीकृत है। यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और मौजूदा जांच के कार्य क्षेत्र पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

च. समान वस्तु

6.1 समान वस्तु की परिभाषा में निम्नानुसार उल्लेख है:-

“समान वस्तु” का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो सभी प्रकार से जांचाधीन उत्पाद के समान अथवा सदृश्य हो अथवा ऐसी किसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है जिसकी विशेषताएं सभी प्रकार से समान न होकर भी जांचाधीन वस्तु की विशेषताओं से अत्यधिक मेल खाती हों।

6.2 एनीलिन का उत्पादन तथा उसकी बिक्री आई एस आई विनिर्देशनों के अनुसार की जाती है जो रसायन के गुण धर्मों को दर्शाते हैं। एनीलिन की गुणवत्ता का उल्लेख उसकी शुद्धता के हिसाब से किया जाता है। एनीलिन की मानक गुणवत्ता में सामान्यतया वज्र के अनुसार 99.8

प्रतिशत शुद्धता होती है। तथापि एनीलिन के उत्पादन के बारे में प्रक्रिया, उपकरण या प्रौद्योगिकी के रूप में कोई खास अंतर नहीं है।

6.3 प्राधिकारी ने पाया है कि याचिकाकर्त्ताओं द्वारा उत्पादित एनीलिन तथा यूरोपीय संघ से आयातित संबद्ध उत्पाद भौतिक तथा रसायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्य तथा उपयोग, उत्पाद विनिर्देशनों इत्यादि जैसी विशेषताओं के रूप में तुलनीय हैं। दोनों ही तकनीकी तथा वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं।

6.4 पूर्वोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि याचिकाकर्त्ता द्वारा उत्पादित एनीलिन यूरोपीय संघ से आयातित एनीलिन के समान वस्तु है।

(छ) घरेलू उद्योग

7.0 मै0 हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि0 (एच ओ सी एल), मै0 नर्मदा कैमेन्टर पेट्रो कैमिकल लि0 (एन सी पी एल) और मै0 एनीरोक्स पिगमेंट्स लि0 ने संयुक्त रूप से याचिका दायर की है। ये तीनों इकाईयां भारत में एनीलिन की एक मात्र उत्पादक हैं। अतः याचिकाकर्त्ता कंपनियों का घरेलू उत्पादन का 100 प्रतिशत हिस्सा बनता है और नियमों के तहत ये याचिका दायर करने की स्थिति में हैं।

7.1 उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि याचिकाकर्त्ता नियमों के तहत घरेलू उद्योग की ओर से याचिका को दायर करने की स्थिति में है।

(ज) पाटन

8.0 धारा 9(क)(1)(ग) के अंतर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:

- (i) समान वस्तु के लिए सामान्य व्यापार के रूप में तुलनीय मूल्य जब तक वह निर्यातक देश या क्षेत्र में उपयोग के निमित्त हो जिसका निर्धारण उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए नियमों के अनुसार किया गया हो, या
- (ii) जब सामान्य व्यापार के रूप में निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में समान वस्तु की कोई बिक्री न हो या जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में विशेष बाजार स्थिति या बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा;

(क) समान वस्तु का तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य जब उसका निर्यात निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उपयुक्त अन्य देश से किया जाए जिसका निर्धारण उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाए ;या

(ख) उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु उत्पादन लागत, जिसमें प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत तथा लाभ के लिए उपयुक्त राशि जोड़ी गई हो जिसका निर्धारण उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार किया जाए:

बशर्ते कि ऐसे मामले में जहां वस्तु का आयात उद्गम वाले देश से इतर किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु को निर्यात वाले देश से होकर केवल यानान्तरित किया गया हो या ऐसी वस्तु का निर्यात वाले देश में उत्पादन नहीं किया जाता हो या निर्यात वाले देश में कोई भी तुलनात्मक कीमत नहीं हो तब सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा ।

निर्यातकों के दावे:

8.1 मै0 बीएसएफ: उन्होंने यह बताया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान एनीलिन का निर्यात नहीं किया है । उन्होंने यह भी बताया है कि भारत को एनीलिन की कोई खेप नहीं भेजी गई है ।

8.2 मै0 बेयर: उन्होंने यह बताया है कि 1 अप्रैल से 31 दिसम्बर तक की जांच अवधि के दौरान बेयर ए जी ने भारत को एनीलिन का निर्यात नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

8.3 प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि दोनों निर्यातकों अर्थात् मै0 बीएसएफ, जर्मनी और मै0 बेयर्स एजी, जर्मनी ने यह बताया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान एनीलिन का निर्यात नहीं किया है और वे नए शिपर के रूप में अलग निर्धारण के लिए अनुरोध कर सकते हैं - उपरोक्त नियम 22 ।

8.4 यूरोपीय संघ के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातिक द्वारा प्रश्नावली में मांगी गई सूचना न दिए जाने के तथ्य को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी को सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के संबंध में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर भरोसा करने के लिए बाध्य होना पड़ा जैसाकि याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराई गई थी ।

8.5 जहां तक जर्मनी के मूल के और न कि ई यू में किसी स्थान के मूल के एनीलिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने यूरोपीय संघ से सम्बद्ध वस्तु के पाटन का आरोप लगाया है, जिसका जर्मनी एक सदस्य देश है । इसलिए यूरोपीय संघ के विरुद्ध पाटनरोधी जांच आरम्भ की गई है ।

सामान्य मूल्य

8.6 याचिकाकर्ता ने यूरोप में कीमतों के बारे में साक्ष्य एक पत्रिका 'केमिकल वीक,' यू.के. के आधार पर उपलब्ध कराए हैं, जिसमें यूरोपीय बाजारों में एनीलिन की सी आई एफ कीमतें 880-925 अमरीकी डालर प्रति मी0 टन बताई गई हैं । प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा बिल्कुल गए दावों को यूरोपीय संघ में कारखाना-गत मूल्य के रूप में और रिकार्ड में उपलब्ध उचित सूचना के रूप में भरोसा किया है । सामान्य मूल्य *** अमरीकी डालर प्रति मी0 टन निर्धारित किया गया है ।

निर्यात कीमत

8.7 याचिकाकर्ताओं ने अप्रैल—दिसम्बर, 1999 की अवधि के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस, कलकत्ता) द्वारा सूचित किए गए निर्यात आंकड़े उपलब्ध कराए हैं । यूरोपीय संघ से हुए आयातों की मात्रा 1251.7 मी. टन बताई गई है और कारखाना-गत निर्यात कीमत निकालने के लिए समुद्री भाड़े, कमीशन, स्वदेशी परिवहन, पत्तन हैंडलिंग के लिए समायोजनों की मांग की गई है ।

8.8 सीमाशुल्क दैनिक सूची, कांडला पत्तन द्वारा यथासूचित आयात संबंधी आंकड़े, जांच अवधि के दौरान यूरोपीय संघ से 2652 मी० टन की मात्रा को दर्शाते हैं, जो कि डीजीसीआईएंडएस द्वारा बताई गई मात्रा से काफी अधिक है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के लिए सीमाशुल्क दैनिक सूची द्वारा यथात्तल्लिखित आयात आंकड़ों पर भरोसा किया था। प्राधिकारी ने समुद्री भाड़े, कमीशन, स्वदेशी परिवहन, पत्तन हैंडलिंग प्रभारों के लिए सामयोजन की अनुमति दी है और तदनुसार *** अमरीकी डालर प्रति मी० टन निर्यात कीमत (कारखाना-स्तर पर) का निर्धारण किया है।

पाटन मार्जिन

8.9 तुलना से संबंधित नियमों में सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना की निम्नानुसार व्यवस्था है।

'पाटन का मार्जिन निकालते समय, निर्दिष्ट प्राधिकारी निर्यात कीमत और सामान्य मूल्य के बीच उचित तुलना करेगा। यह तुलना व्यापार के उसी स्तर पर सामान्यतः कारखानाद्वारा-स्तरपर की जाएगी और यथासम्भव उसी समयावधि के दौरान की गई बिक्रियों के संबंध में की जाएगी। जो अंतर तुलनीयता पर प्रभाव डालते हैं, उनके लिए प्रत्येक मामले में गुण-दोष के आधार पर समुचित छूट दी जाएगी; अंतर में शामिल है बिक्री की शर्तें, कराधान, व्यापार के स्तर, मात्राएं, वास्तविक विशेषताएं तथा अन्य अंतर जो कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किए जाते हैं।

8.10 सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और प्राधिकारी के पास उपलब्ध अन्य प्रकाशित सूचना को ध्यान में रखा। निर्धारित किया गया सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, कारखाना द्वारा स्तर पर है। सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की तुलना करने पर *** डालर प्र०मी०टन का पाटन मार्जिन निकलता है।

यूरोपीय संघ के लिए निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया गया पाटन मार्जिन

174.69 % बनता है ।

•

अ. क्षति

9.0 उपरोक्त नियम 11, अनुबंध-II के अंतर्गत जब क्षति के बारे में निष्कर्ष निकाला जाता है तो ऐसे निष्कर्ष में ".....पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में मूल्यों पर उनका प्रभाव, ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामकारी प्रभावों समेत सभी संगत तथ्यों पर विचार करते हुए" घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण शामिल होगा । मूल्यों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करनी आवश्यक समझी जाती है कि क्या भारत में समान वस्तु के मूल्य की तुलना में पाटित आयातों से मूल्यों में पर्याप्त गिरावट रही है अथवा क्या अन्यथा ऐसे आयातों का उद्देश्य मूल्यों को काफी हद तक स्थिर रखना है अथवा मूल्य वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी हद तक हो गयी होती ।

नियमावली के अनुबंध-II के नियम(iii)में यह अपेक्षित है कि जिस मामले, में किसी उत्पाद का आयात एक से अधिक देशों से हुआ हो और उनकी एक साथ पाटनरोधी जांच हो रही है तो प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी रूप में मूल्यांकन करे । तथापि ऐसा मूल्यांकन केवल तभी किया जा सकता है, जब यह निर्धारित किया गया हो कि

(क) प्रत्येक देश से किए गए आयातों के बारे में पाटन मार्जिन निर्यात मूल्य के प्रतिशत के रूप में 2 प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से किए गए आयातों की मात्रा भारत में समान वस्तु के आयातों का 3% है, और

(ख) आयातित वस्तु और समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभावों का संचयी से मूल्यांकन करना उचित है ।

9.1 प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोपीय संघ से किए गए आयातों की मात्रा एवं पाटन मार्जिन उक्त निर्धारित सीमा से अधिक है । आयातों के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन उचित है क्योंकि भारतीय बाजार में यूरोपीय संघ से किए गए निर्यात कीमतों की स्पर्धा सीधे घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई कीमतों से थी ।

9.2 भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमों के अनुबंध- II (IV) के अनुसार आयातों की मात्रा, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, बाजार हिस्सा, लाभप्रदता, निवल बिक्री पार्टित, पाटन की मात्रा एवं मार्जिन जैसे संकेतों पर विचार किया जो उद्योग को स्थिति पर प्रभाव डालते हैं ।

9.3 आयातों की मात्रा

डीजीसीआईएंडएस द्वारा यथासूचित आयातों की मात्रा निम्नानुसार रही है:

	1997-98	1998-99	जांच अवधि (अप्रैल-दिसेंबर)	(वार्षिक)
यूरोपीय संघ से हुए आयात(मीटन)	251	172	* 2652	(3536)
कुल आयात में यूरोपीय संघ का हिस्सा(%)	4.3	3.3	98.4	
जापान/यूएसए से हुए आयात(मीटन)	5298	5065	0	(0)
अन्य देशों से हुए आयात(मीटन)	298	40	43	(57)
कुल आयात(मीटन)	5847	5277	2695	
भारतीय उत्पादकों की बिक्री(मीटन)	38373	35820	31468	(41957)
देश में कुल मांग(मीटन)	44220	41097	34163	(45550)
मांग में बाजार हिस्सा				
यूरोपीय संघ	0.6	0.5	7.8	
जापान/यूएसए	11.9	12.3	0	
अन्य	0.7	0.1	0.1	
घरेलू उद्योग	86.8	87.1	92.1	
	100.0	100.0	100.0	

स्रोत : सीमाशुल्क दैनिक सूचि, कांडला पत्तन

जैसाकि उपर्युक्त से देखा जा सकता है, यूरोपीय संघ से हुए आयातों की मात्रा जो 1997-98 के दौरान 251 मीटन थी, वर्ष 1999-2000 में बढ़कर 2652मीटन (3536मीटन वार्षिक) हो गई । कुल आयातों में यूरोपीय संघ का हिस्सा 1997-98 में 4.3 % से बढ़कर जांच अवधि में 98.4 % हो गया । जापान, यूएसए से हुए आयातों की मात्रा 5298मीटन(97-98)से घटकर जांच अवधि के दौरान शून्य हो गई । यूरोपीय संघ के विरुद्ध मौजूदा जांच शुरू होने से पहले जापान/यूएसए से आरोपित पाटन के संबंध में पाटनरोधी जांच चल रही थी ।

हालांकि यूरोपीय संघ के मामले में मांग संबंधी बाजार हिस्सा 0.6 % (97-98)से कई गुणा बढ़कर 7.8 % (जांच अवधि)हो गया है, तथापि घरेलू उद्योग के संबंध में बाजार हिस्सा भी 86.8 % (97-98)से बढ़कर 92.1 % (जांच अवधि)हो गया है ।

9.4 उत्पादन और क्षमता उपयोग

यह देखा गया है कि याचिकाकर्ता कंपनियों (अर्थात् एचओसीएल, एनसीपीसीएल और एनिरोक्स पिगमेन्ट्स) की उत्पादन क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग निम्नानुसार रहे हैं :-

वर्ष	क्षमता(मी0टन)	उत्पादन(मी0टन)	क्षमता उपयोग %
1996-97	48100	40435	84.06
1997-98	48500	47254	97.43
1998-99	49100	41780	85.09
जांच अवधि(अप्रैल-दिस0)	36825	32768	88.98
वार्षिक रूप से	49100	43689	88.98

घरेलू उद्योग का उत्पादन 1997-98 में 47254मी0 टन से घटकर जांच अवधि के दौरान 43689मी0 टन (वार्षिक) हो गया। क्षमता उपयोग, जो 1997-98 के दौरान 97.43 % था, जांच अवधि के दौरान घटकर 88.89 % रह गया।

9.5 बिक्री की मात्रा:

गत तीन वर्षों में घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा निम्नानुसार रही थी:-

मी0 टन में

1997-98	1998-99	जांच अवधि	वार्षिक
38373	35820	31468	41957

घरेलू उद्योग की बिक्री में 1998-99 में पर्याप्त रूप से कमी आई है। यद्यपि बिक्रियों में चालू वर्ष में सुधार हुआ है फिर भी इसके पीछे एनीलिन के प्रचालन के संबंध में अलग-अलग इकाईयों द्वारा उठाया गया भारी घाटा रहा है।

9.6 अंतिम स्टॉक

मी0 टन में

1997-98	1998-99	जांच अवधि	वार्षिक
2226	2252	2881	3841

यह देखा जा सकता है कि याचिकाकर्ताओं का अंतिम स्टॉक 1997-98 के दौरान 2226 मी0 टन से बढ़कर जांच अवधि (अप्रैल-दिस0,99) के दौरान 2881 मी0 टन हो गया है।

9.7 कीमत कटौती : यूरोपीय संघ से हुए आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना में काफी कम है। अतः घरेलू उद्योग अपनी उत्पादन लागत से काफी कम कीमत पर बिक्री कर रहा है। इसलिए यूरोपीय संघ से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों में भारी कटौती करनी पड़ रही है।

9.8 घरेलू बिक्री

(% में)

	1997-98	1998-99	जांच अवधि(अप्रैल-दिस0,99)
एचओसीएल	100	93	९८
एनसीपीएल	100	89	९१
एनिरॉक्स	100	98	९७
घरेलू उद्योग के लिए औसत	100	91	९५

जैसाकि उपरोक्त से देखा जा सकता है % में घरेलू बिक्री कीमतों में 1997-98 की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातों के कारण भारतीय उद्योग की कीमतों में काफी हद तक कमी हो रही है। इससे घरेलू उद्योग के सामने अपनी बिक्री कीमतों को बढ़ाने में रुकावट आई है।

9.9 जहां तक कुछ हितबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए इस मुद्दे का संबंध है कि अप्रैल-दिस0,99 के दौरान एनीलिन का कोई आयात नहीं हुआ है और इसके फलस्वरूप अप्रैल-दिसम्बर, 99 के दौरान घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोपीय संघ से होने वाले आयातों की मात्रा में जांच-अवधि के दौरान तेजी से वृद्धि हुई है और आयातों के फलस्वरूप 1999-2000 की प्रथम दो तिमाहियों के दौरान भारतीय बाजार में कीमत में कमी आई है। इसके फलस्वरूप एनीलिन के अलग-अलग उत्पादनकर्ता एककों को भी काफी घाटा हुआ है।

9.10 क्षति संबंध निष्कर्ष

- यूरोपीय संघ से हुए आयातों की मात्रा में जांच-अवधि के दौरान तेजी से वृद्धि हुई है।
- उत्पादन और क्षमता उपयोग में वर्ष 1997-98 की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट प्रदर्शित हुई है।
- यूरोपीय संघ से आयातित वस्तुओं के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है।

- जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में वृद्धि हुई है और प्राप्तियों में गिरावट आई है। इस प्रकार घरेलू-उद्योग को जांच अवधि के दौरान क्षति हुई है।
- संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण भारतीय बाजार में कीमत में गिरावट आई है। प्राधिकारी, उपरोक्त पर विचार करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि घरेलू उद्योग को यूरोपीय संघ के मूल के एनीलिन के आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

(अ) कारणात्मक संबंध

- भारत में हुए कुल आयातों की तुलना में दूसरे देशों से हुआ एनीलिन का आयात नगण्य है और वास्तव में जांच अवधि के दौरान जापान/यूएसए से हुए आयात की मात्रा शून्य है। इसके अलावा, जापान और यूएसए से होने वाले आयातों पर पहले से ही पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है और आगे जांच चल रही है। इसलिए अन्य देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।
- भारत में एनीलिन की मांग में कोई खास अंतर नहीं आया है। इसलिए प्राधिकारी नोट करते हैं कि मांग में आए अंतर से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुए हैं।
- एनीलिन का उत्पादन करने वाले याचिकाकर्ताओं द्वारा अपनाई गई प्रौद्योगिकी विश्व भर में अन्य उत्पादकों द्वारा अपनाई जा रही प्रौद्योगिकी के समान है। विनिर्माण प्रक्रिया में कोई खास अंतर नहीं है। अतः प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्रौद्योगिकी में अन्तर, यदि कोई हो, से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।
- यह प्रमाणित करने के लिए कि सम्बद्ध देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है, प्राधिकारी यह निर्णय लेते हैं कि यूरोपीय संघ से हुए आयातों के बाजार हिस्से में हुई वृद्धि से घरेलू उद्योग को अपना बाजार हिस्सा बढ़ाने में रुकावट आई है जोकि यूएसए/जापान से होने वाले आयातों में कमी के कारण संभव हो सकता था।

एनीलिन के विनिर्माण के लिए अपेक्षित निविष्टि/फीड स्टाक की कीमतों में वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग आयातित उत्पाद की पंहुच कीमत की बराबरी करने में असफल रहा। संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उत्पाद की कीमतों में कमी आई है जिससे घरेलू उद्योग अपने उत्पादों को अलाभकारी कीमतों पर बेचने के लिए बाध्य हुआ है। इसलिए घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति उक्त देश से हुए पाटित आयातों के कारण हुई थी।

(ट) भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

- 11.0 सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य ऐसे पाटन को समाप्त करना है, जिससे भारतीय उद्योग को नुकसान हो रहा है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना है जोकि देश के सामान्य हित में है।
- 12.0 यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से सम्बद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकती है। किन्तु, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी, विशेषकर तब, जब पाटनरोधी शुल्क की लेवी उस राशि तक ही सीमित कर दी जाए जो कि घरेलू उद्योग को हुए नुकसान को कम करने के लिए आवश्यक हो। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपायों को लागू किए जाने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे। भारतीय उद्योग का हास रुकेगा और एनीलिन के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी। पाटनरोधी उपायों से सम्बद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे, इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

17.0 इस उद्देश्य के लिए आयातों का पंहुच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के अधीन सीमा शुल्क विभाग द्वारा यथाआकलित निर्धारणीय मूल्य होना और उसमें सीमा शुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3,3क,8ख,9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमाशुल्क शामिल होंगे ।

18.0 प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्त्ताओं तथा अन्य हितबद्ध ज्ञात पार्टियों को अलग से संबोधित किया जा रहा है, जो इस अधिसूचना के प्रेषण की तारीख से 40 दिनों के अन्दर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं । कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है ;

(ड) आगे की प्रक्रिया:

19.0 प्रारम्भिक निष्कर्षों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुसरण किया जाएगा:-

20.0 प्राधिकारी सभी हितबद्ध पार्टियों से इन निष्कर्षों के बारे में टिप्पणियां आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम निष्कर्षों में विचार किया जाएगा ;

21.0 प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्त्ताओं तथा अन्य हितबद्ध ज्ञात पार्टियों को अलग से संबोधित किया जा रहा है, जो इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के अन्दर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं । कोई अन्य हितबद्ध पार्टी भी इन निष्कर्षों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत करा सकती है ।

13.0 घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए आवश्यक पाटनरोधी शुल्क की मात्रा को सुनिश्चित करने के निमित्त प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए क्षमता उपयोग के ईस्टर्म स्तर पर उत्पादन की अधिकतम लागत पर विचार करके भारत में घरेलू उद्योग के लिए एनीलिन की उचित बिक्री कीमत पर विवास किया ।

(ठ) निष्कर्ष

14.0 पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात् यह देखा गया है कि:

(क) यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एनीलिन का सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर भारत का निर्यात किया गया है, जिसके कारण पाटन हुआ है ;

(ख) भारतीय उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ;

(ग) क्षति संबद्ध देश से हुए आयातों के कारण पंहुची है ।

15.0 यह आवश्यक समझा गया है कि जांच लंबित रहने तक यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एनीलिन के सभी आयातों पर अंतिम निर्धारण होने तक, अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए ।

16.0 प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन के बराबर अथवा उससे कम पाटनरोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने पर विचार किया है, जिसे यदि लगाया जाएगा तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी यथासंशोधित उपोक्त खण्ड (घ) नियम 4)। तदनुसार, यह प्रस्ताव किया जाता है कि अंतिम निर्धारण होने तक यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एनीलिन, जो सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के सीमाशुल्क उपशीर्ष 2921.41 के तहत वर्गीकृत है, पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए । पाटनरोधी शुल्क की राशि कालम 3 में उल्लिखित राशि होगी:-

देश	उत्पादक/निर्यातक का नाम	शुल्क की राशि (भारतीय रुपये)
1	2	3
यूरोपीय संघ	सभी निर्यातक	0.342

22.0 प्राधिकारी द्वारा सभी हितबद्ध पार्टियों को भौतिक अनुरोध करने का अवसर प्रदान किया जाएगा ।

23.0 अंतिम निष्कर्षों की घोषणा करने से, पहले प्राधिकारी आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे ।

एल. वी. सप्तश्रीष्टि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 16th November, 2000

PRELIMINARY FINDINGS

**Subject :—Anti-Dumping Investigation concerning Imports of Aniline from European Union (EU)—
Preliminary Findings.**

No. 21/1/2000-DGAD.— Government of India having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury), Rules, 1995, thereof:

A.PROCEDURE

1. The procedure given below has been followed with regard to the investigations:
 - i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Hindustan Organic Chemicals Ltd. (HOCL), M/s. Narmada Chematur Petro Chemicals Ltd. (NCPL), and M/s. Anirox Pigments Ltd., alleging dumping of Aniline originating in or exported from European Union.
 - ii) The preliminary scrutiny of the application revealed certain deficiencies, which were subsequently rectified by the petitioner. The petition was, therefore, considered as properly documented.
 - iii) The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the Petitioner decided to initiate investigations against alleged dumped imports of Aniline

originating in or exported from European Union. The Authority notified the Delegation of European Union, New Delhi about the receipt of dumping allegation before proceeding to initiate investigations in accordance with sub rule 5 (5) of the Rules;

- iv) The Authority issued a Public Notice dated 29th May, 2000 published in the Gazette of India Extraordinary initiating anti-dumping investigations concerning imports of Aniline classified under Chapter-29 customs sub-heading no. 2921.41 of the Customs Tariff Act, 1975, originating in or exported from European Union.
- v) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known exporters (whose details were made available by the Petitioner) and industry associations and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- vi) The Authority forwarded a copy of the Public Notice to the known importers (whose details were made available by the petitioner) of Aniline and advised them to make their views known in writing within forty days from the date of the letter;
- vii) Request was made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) to arrange details of imports of Aniline;
- viii) The Authority provided copies of the Petition to the Known exporters and the Delegation of European Union in India in accordance with Rule 6(3) supra;
- ix) The Authority sent a questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporters, from the European Union in accordance with Rule 6(4);

1. M/s. BASF Aktiengesellschaft, Ludwigshafen, Germany

2. M/s. Bayers AG, 5090 Leverkusen, Germany

Responses were received from the following exporters:

1. M/s. BASF Aktiengesellschaft, Ludwigshafen
2. M/s. Bayer AG Leverkusen, Germany

- x) The Delegation of EU was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6 (2) with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, petition and questionnaire sent to the exporters was also sent to them, alongwith a list of known exporters/producers
- xi) A questionnaire was sent to the following known importers of Aniline in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4);

List of Importers:-

1. M/s. Gujarat Dyestuff Industries, Baroda
2. M/s. Mardia Chemicals Ltd, Ahmedabad
3. M/s. Navin Chemical Enterprises, Dewas
4. M/s. J.K. Pharma, Ahmedabad
5. M/s. ICI India Ltd., Calcutta
6. M/s. Dintex Dyechem Ltd., Ahmedabad
7. M/s. Anar Chemical Industries, Ahmedabad
8. M/s. Metro Chem Industries Ltd, Ahmedabad
9. M/s NOCIL, Thane
10. M/s. Cyanides & Chemicals Co., Surat
11. M/s. Ganesh Chemical Industries, Mumbai
12. M/s. Color Chem Ltd, Thane
13. M/s. Indo Colchem Ltd, Ahmedabad
14. M/s. Bayer India Ltd., Thane
15. M/s. Ind. Solvents & Chem. P. Ltd., Ankleshwar
16. M/s. Jaysynth Dyechem Ltd., Mumbai
17. M/s. Sahyadri Dyestuff & Chemicals, Pune
18. M/s. Gayatri Intermediates (P) Ltd., Ahmedabad.

Responses were received from the following:

1. M/s. Bayers(India) Ltd., Mumbai
2. M/s. ICI India Ltd. Gurgaon, Haryana
3. M/s. Colour-Chem Ltd. (Clariant), Thane
4. M/s. National Organic Chemicals Industries Ltd., Mumbai

- xii) Some of the interested parties requested for extension of time to submit the responses, which was, upon good cause shown allowed by the Authority.

- xiii) The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- xiv) Cost investigations were also conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the Petitioner.
- xv) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;
- xvi) Investigations were carried out for the period starting from 1st April, 1999 to 31st December, 1999.

B PETITIONERS VIEWS

2. The petitioners have raised the following issues in their petition.
 - a. Aniline is being dumped by the exporters, manufacturers and traders from European Union.
 - b. Aniline is being imported directly from EU as well as through traders in third countries such as Switzerland.
 - c. The official statistics published by Government of India through the DGCI&S, Calcutta reflects true, reliable and reasonable picture with regard to volumes and value of imports of Aniline. The imports from EU increased significantly in absolute terms. Imports from EU which were merely 236.53 MT in 1996-97 increased to 1140.5 MT during period April-December, 1999 i.e. 1521 MT (on annualised basis).
 - d. The market shares of imports from EU had earlier declined in view of dumping resorted by exporters from Japan/USA. However with the initiation of anti dumping action against Japan/USA the exports have steeply increased from EU. In the period April-Dec.1999 the imports from EU stood at 98% (from about 3% in the preceding year).
 - e. The imports from EU are causing severe price undercutting. The landed price of imports from EU is significantly lower than the selling price of domestic industry.

C. VIEWs OF EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES:

EXPORTERS

3.1 M/s. BASF, Germany: They have stated that they have not exported Aniline during the period of investigation to India. They have stated that BASF is producing the product under consideration i.e. Aniline. During the POI, there was no BASF shipment left from any country of the EU to India. However, they reserve their right to file new shipper investigation under rule 22 when they start exports to India.

3.2 M/s. Bayer AG Germany : They have stated that with in investigation period 1st April to 31st Dec.1999, Bayer AG has not exported Aniline product to India.

IMPORTERS

3.3 M/s. Bayer (India) Ltd. (BIL), Mumbai : They have stated that they have not directly imported during the period April 1997-Dec.1999. BIL has however, made purchases through M/s. C.J. Shah a quantity of 128.34 during April-May, 1999

BIL has fully supported the local manufacturers for its purchases of Aniline.

They have also stated that after the imposition of provisional anti-dumping duty on imports of Aniline originating from Japan & USA, the local manufacturers have increased their prices of Aniline and they have strongly opposed the move of the petitioners for initiation of anti dumping investigations.

3.4 M/s. ICI India Ltd., Haryana: M/s. ICI India Ltd. is a subsidiary of M/s. ICI plc. of UK. They have stated that they are engaged in business of manufacturing and dealing in paints,rubber, chemicals, pharmaceuticals, and specialty chemicals etc. They have also stated that no imports of Aniline were carried out during the period of investigation.

3.5 M/s. Colour-Chem Ltd., Thane (Clariant)

The importers have stated that they have not imported Aniline oil and have only purchased the raw material from domestic supply sources. They have also stated that the increase in domestic Aniline prices has affected the cost of various down stream products thereby rendering imports more attractive.

3.6 M/s.National Organic Co.Ltd., Mumbai

The importers have submitted that though the Petitioners have contended in their petition that Aniline is exported from EU to India at less than its normal value as defined under Section 9A of the Customs Tariff Act 1975, the petition does not disclose and specify as to what according to them is the normal value.

The Magazine/Bulletin, information relied upon by the petitioners for purpose of normal value cannot be treated as confidential information.

The import information furnished by the petitioners for the period of investigation is not reliable. As admitted by the petitioners themselves that there have been no imports on Aniline during Aug- Dec99 the production of Aniline by the domestic industry during April-December,1999 show no injury to the petitioners. Other indicators like sales also show no injury to the domestic industry. The domestic industry have been able to actually increase the prices progressively during April 1999-Dec.1999 and beyond. The theory of price undercutting made out by the petitioners is false and untrue.

Since the allegation of dumping is only in respect of two manufacturers in Germany, the petitioners could, if at all seek imposition of anti dumping duty on Aniline originating from Germany and not anywhere from EU normally notified as "Others" The Notification also should specify as Aniline originating from BASF, Bayer, Germany and not exported from Germany/EU, since East Europe producers also use west European coasts such as Rotterdam for their export.

They have submitted that there is no merit in the petition and have prayed that the same be dismissed.

D EXAMINATION OF THE ISSUES RAISED

4.1 The foregoing submissions made by the petitioner, exporters, importers and other interested parties, to the extent these are relevant as per Rules and to the extent these have a bearing upon the case, have been examined and considered and have been dealt with at appropriate places in these findings.

E PRODUCT UNDER INVESTIGATION

5.1 The product under consideration in the present investigation is Aniline also known as Aniline oil. Aniline is a transparent, oily, Colourless to pale yellow liquid when freshly distilled. It darkens on exposure to light or air. Aniline is a primary amine compound and a basic organic chemical essential for vital industries such as drugs, pharmaceuticals, dyes and dye intermediates. Aniline is also used in some other industries such as rubber chemicals, explosives, resins etc.

5.2 Aniline is an intermediate for Rubber Chemicals (vulcanization, accelerators, antioxidants), Dyes, Drugs such as analgin, Sulpha drugs, Photographic chemicals (hydroquinone), Isocyanates (MDI or Methylene Diphenylene Di-Isocyanate). In India, 70% of the production of Aniline is used in rubber chemicals, drugs and drug intermediates and dye industries, whereas 80% of production of Aniline world-over is used in MDI.

5.3 Aniline is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975, under custom sub-heading no. 2921.41. The classification is however indicative only and in no way binding on the scope of the present investigations.

F LIKE ARTICLE

6.1 Definition of Like Article states as under:

"Like Article means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."

6.2 Aniline is produced and sold in specifications as per ISI standards, which depict the properties of the chemical. The quality of Aniline is described in terms of its purity. The standard quality of Aniline normally contains 99.8% purity by weight. There is however, no significant difference in terms of process, equipment or technology for the production of Aniline.

6.3 The Authority finds that Aniline produced by the petitioners and the subject product imported from European Union are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, function and uses, products specifications etc. The two are technically and commercially substitutable.

6.4 In light of the foregoing, Authority concludes that Aniline produced by the petitioner is a Like Article to the Aniline imported from European Union.

G DOMESTIC INDUSTRY

7.0 M/s. Hindustan Organic Chemicals Ltd. (HOCL), M/s. Narmada Chematur Petro Chemicals Ltd. (NCPL), and M/s. Anirox Pigments Ltd., have jointly filed the petition. These three units are the only producers of Aniline in India. The petitioner companies, therefore, account for 100% of domestic production and have the required standing to file the petition under the Rules.

7.1 In light of the foregoing, the Authority concludes that the petitioner has the standing to file the petition on behalf of the domestic industry under the rules.

H DUMPING:

8.0 Under Section 9A (1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) "the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-

- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (b) the cost of production of the said article in the country of origin alongwith reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin".

Claims of the Exporters:

- 8.1 **M/s BASF** : They have stated that they have not exported Aniline during the Period of Investigation. They have also stated that there is no shipment of Aniline to India.
- 8.2 **M/s Bayer**: They have stated that within the investigation period 1st April to 31st December, Bayer AG has not exported Aniline to India.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

- 8.3 Authority notes that the Two exporters, viz. M/s BASF, Germany and M/s Bayers AG, Germany have stated that they have not exported Aniline during the POI and may request for separate assessment as a new shipper - Rule 22 supra.
- 8.4 In view of the non-submission of information to the questionnaire by any other producers/ exporters from EU, the Authority have been constrained to rely upon best available information with regard to normal value and export price as provided by the petitioners.
- 8.5 As regards to imposition of anti dumping duty on Aniline originating from Germany and not anywhere from EU, Authority notes that the Domestic Industry has alleged dumping of subject good from European Union of which Germany is a member country. Hence the anti dumping investigations have been initiated against European Union as a territory.

Normal Value

- 8.6 The petitioners have provided evidence with respect to prices in Europe, based on a Magazine Chemical Week UK which reported CIF prices of Aniline in European markets in the region of US \$ 880 – 925 PMT. The Authority relies upon the claim made by the petitioner with regard to normal value as at ex-factory in European Union and as the best information on record. The normal value is determined at US \$ *** PMT.

Export Price

8.7 The petitioners have provided the export data as reported by Directorate General of Commercial Intelligence & Statistics (DGCI&S, Calcutta) for the period April-December, 1999. The volume of imports from EU is reported at 1251.7 MT and have claimed adjustments on account of Ocean freight, commission, inland transportation, port handling to arrive at ex-factory export price.

8.8 The import data as reported by Customs daily list, Kandla Port indicates the volume of 2652 MT from European Union during the POI which is much higher than that reported by DGCI&S. The Authority had relied on the import data for POI as reported by Custom Daily List. The Authority has allowed adjustments on account of Ocean freight, commission, inland transportation, port handling charges and export price (ex-factory level) has been accordingly determined, at US \$ *** PMT.

Dumping Margin

8.9 The Rules relating to comparison provides comparison of normal value and export price provides as follows:

"While arriving at margin of dumping Designated Authority shall make a fair comparison between the export price and the normal value. A comparison shall be made at the same level of trade, normally at ex-works level and in respect of sales made and as nearly possible the same time. Due allowance shall be made in each case on its merits, for differences which occur price comparability including differences in conditions and terms and sales, taxation, levels of trade quantities, physical characteristics and any other differences which are demonstrated to affect price comparability."

8.10 For the purpose of fair comparison between normal value and export price the Authority took into account the information furnished by the petitioner and other published information available with the Authority. The normal value and export prices determined as detailed above are at ex-works level. The comparison of normal value and export price works out to a dumping margin of *** PMT. The dumping margin expressed as a percentage of export price for EU works out to 166.17 %.

INJURY

9.0 Under Rule 11 supra, Annexure-II, When a finding of injury is arrived at, such finding shall involve determination of the injury to the domestic industry, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...." In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports

as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree;

Rule (iii) of the Annexure II to the Rules requires that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, The Authority will cumulatively assess the effect of such imports. Such assessment can be, however, made only if it is determined that:

- a) the margin of dumping in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the import of the like article in India, and
- b) the cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

9.1 The Authority notes that the margin of dumping and quantum of imports from European Union as a territory are more than the limits prescribed above. Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the export prices from European Union as a territory were directly competing with the prices offered by the domestic industry in the Indian market.

9.2 For the examination of the impact of imports on the domestic industry in India, the Authority has considered such further indices having a bearing on the state of the industry such as quantum of Imports production, capacity utilisation, sales quantum, stock market share, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping etc. in accordance with Annexure II (iv) of the rules supra.

9.3 Quantum of Imports :
The Volume of imports as reported by DGCI & S have been as under :

	1997-98	1998-99	POI (Apr-Dec.99)	(Annualised)
Import from EU(MT)	251	172	*2652	(3536)
Share of EU in total import(%)	4.3	3.3	98.4	
Import from Japan/USA(MT)	5298	5065	0	(0)
From other countries(MT)	298	40	43	(57)
Total Imports (MT)	5847	5277	2695	
Sales of Indian Producers(MT)	38373	35820	31468	(41957)
Total Demand in Country (MT)	44220	41097	34163	(45550)
Market Share in Demand				
EU	0.6	0.5	7.8	
Japan/USA	11.9	12.3	0	
Others	0.7	0.1	0.1	
Domestic Industry	86.8	87.1	92.1	
	100.0	100.0	100.0	

* Source Customs Daily List- Kandla Port.

As may be seen from the above, the volume of imports from EU which was 251 MTs during 1997-98 increased to 2652 MT (3536 MT Ann.) in 1999-2000. The share of European Union in total imports raised from 4.3% in 1997-98 to 98.4% in POI. The volume of imports from Japan, USA which was 5298 MT (97-98) reduced to Nil during POI. The anti-dumping investigations for alleged dumping from Japan/USA were in progress before the initiation of the present investigation against EU.

While the market share in demand with respect to European Union have increased manifold from 0.6% (97-98) to 7.8% (POI). Market share with respect to domestic industry has also shown increase from 86.8% (97-98) to 92.1% (POI).

It is observed that the market share in demand for Japan/USA in previous years has been shared by major proportion by EU and to a small extent by the domestic industry during the POI.

9.4 Production and Capacity Utilisation

It is observed that the production capacity, production and capacity utilization of the petitioner companies (viz., HOCL, NCPL and Anirox Pigments) were as under:

Year	Capacity (MT)	Production (MT)	Capacity Utilisation %
1996-97	48100	40435	84.06
1997-98	48500	47254	97.43
1998-99	49100	41780	85.09
POI(Apr-Dec)	36825	32768	88.98
Annualised	49100	43689	88.98

The production of domestic industry decreased from 47254 MT in 1997-98 to 43689 MT (Ann.) during the period of investigation. The capacity utilization which was 97.43% during 1997-98 decreased to 88.98 during POI.

9.5 Sales Volume:

The sales volumes of domestic industry in the last three years were as under :-
In MT

1997-98	1998-99	POI	Annualised
38373	35820	31468	41957

The domestic industry has lost substantial sales in 1998-99. Though the sales have improved in the current year, the same is at the cost of substantial losses made by the individual units in respect of Aniline operations.

9.6 Closing Stock:

In MT

1997-98	1998-99	POI	Annualised
2226	2252	2881	3841

It may be observed that the closing stock of petitioners were 2226 MT during 1997-98 have increased to 2881 MT during POI.(April-Dec.99)

9.7 Price undercutting:- The landed price of imports from EU is significantly lower than the selling price of domestic industry. As such the domestic industry is selling at prices significantly below their cost of production. The imports from EU are thus causing severe price undercutting of the domestic industry.

9.8 Domestic Sales:

(in %)

	1997-98	1998-99	POI(Apr to Dec /99)
HOCL	100	93	88
NCPL	100	89	81
Anirox	100	98	87
Average for domestic industry	100	91	85

As seen from the above the domestic sales prices in terms of % have declined during POI compared to 1997-98. The Authority notes that imports were undercutting the prices of Indian industry to a significant degree. This has prevented the industry from increasing their selling prices.

9.9 As regards to issue raised by some interested party that there has been no imports of aniline during Aug –Dec 99 and consequently no injury to the domestic industry during April-Dec 99, Authority notes that volume of imports from EU increased sharply during POI and the imports resulted in price undercutting in Indian market during first two quarters of 1999-2000. This also resulted in substantial losses by individual units producing Aniline.

9.10 Conclusions of Injury:

- The volumes of imports from EU have increased sharply during POI.
- The production and capacity utilisation has shown decline during POI compared to year 1997-98.
- The market share of imported goods from EU has gone up.
- The cost of production in the domestic industry has gone up and the realisation have gone down during POI. Thus the domestic industry has suffered losses during the POI.
- Imports from subject countries resulted in price undercutting in Indian market.

The Authority, after considering the above, concludes that the domestic industry has suffered material injury from imports of Aniline originating from EU.

J CAUSAL LINK

- 10.1 The import of Aniline from other countries is insignificant when compared to total imports to India and in fact the volume of import from Japan/USA is nil during POI. Further, imports from Japan and USA are already attracting provisional anti-dumping duties and further investigations are in progress. The imports from other countries are, therefore, not causing any injury to the domestic industry.
- 10.2 There is no significant change in demand for Aniline in India. The Authority notes that the changes in demand have, therefore, not contributed to any injury to the domestic industry.
- 10.3 The technology adopted by the petitioners producing Aniline, is comparable to the technology being adopted by other producers world-over. There is no significant difference in the manufacturing process. The Authority notes that the changes if any, in technology have, therefore, not contributed to any injury to the domestic industry
- 10.4 In establishing that the material injury to the domestic industry has been caused by the imports from the subject countries, the Authority holds that the increase in market share of imports from European Union prevented the domestic industry

from increasing the market share which could be possible as a result of decline in imports from decline in imports from USA/Japan. The domestic industry failed to match the landed price of the imported product on account of the rise in prices of the inputs/feedstock required for the manufacture of aniline. Imports from the subject countries undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell at un-remunerative prices. Resultantly, the domestic industry incurred losses. The material injury to the domestic industry was, therefore, caused by the dumped imports from the said countries.

K INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

- 11.0 The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to reestablish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.
- 12.0 It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if they levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of aniline. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.
- 13.0 To ascertain the extent of anti-dumping duty necessary to remove the injury to the domestic industry, the Authority relied upon reasonable selling price of Aniline in India for the domestic industry, by considering the optimum cost of production at optimum level of capacity utilization for the domestic industry.

L CONCLUSIONS

14.0 It is seen, after considering the foregoing, that:

- Aniline originating in or exported from European Union has been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- The Indian industry has suffered material injury
- Injury has been caused by imports from the subject countries.

15.0 It is considered necessary to impose anti-dumping duty, provisionally, pending final determination, on all imports of Aniline originating in or exported from the European Union, pending investigations.

16.0 Authority considered to recommend the amount of anti-dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry (clause (d) Rule 4 supra as amended). Accordingly, it is proposed that provisional anti-dumping duties be imposed, on Aniline originating in or exported from European Union falling under Customs sub-heading 2921.41 of the Customs Tariff Act, pending final determination. The anti-dumping duty shall be the amount mentioned in Col.3.

Country/Territory	Name of the Producer/Exporter	Amount of Duty (US \$ per Kg)
1	2	3
European Union	All exporters	0.342

17.0 Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B and 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

18.0 Exporters, importers, petitioners and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of the dispatch of the letter.

Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.

M FURTHER PROCEDURE

- 19.0 The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings:
- 20.0 The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings
- 21.0 Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority who may make known their views, within forty days of the dispatch of this notification. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.
- 22.0 The Authority would provide opportunity to all interested parties for oral submissions;
- 23.0 The Authority would disclose essential facts before announcing the final findings.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority